सावधान! समुद्र का जल तेज़ाबी हो रहा है

डॉ. दिनेश मणि

समुद्र कार्बन डाईऑक्साइड को सोखने की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हरे-भरे पेड़-पौधों के बाद समुद्र ही वायुमंडल की कार्बन डाईऑक्साइड अवशोषित करने का दूसरा बड़ा माध्यम है। लेकिन वायुमंडल में तेज़ी से बढ़ता कार्बन डाईऑक्साइड का स्तर समुद्र के पानी को भी प्रभावित कर रहा है। समुद्र के पानी की पीएच तेज़ी से बदल रही है और यह पानी आने वाले समय में तीव्र तेज़ाब में बदल सकता है।

वैज्ञानिकों ने कहा है कि समुद्र में स्थित मूंगे की चट्टानों और कुछ जलीय जीवों को पानी की इस बदलती प्रकृति के ही चलते नुकसान पहुंच रहा है। वैज्ञानिकों ने पिछले कुछ दशकों में तेज़ी से हो रहे इस परिवर्तन पर चिंता जताई हैं और नीति निर्धारकों से इस तरह के परिवर्तन रोकने की दिशा में शीघ्र कदम उठाने की अपील की है। इसमें कहा गया है कि समुद्र के पानी के अम्लीय बनने की प्रक्रिया में तेज़ी आई है और यह बहुत नुकसानदेह हो सकता है। आंकड़ों के अनुसार 18वीं शताब्दी में औद्योगीकरण शुरू होने से अब तक वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा लगभग 40 फीसदी बढ़ चुकी है। परिणामस्वरूप दुनिया भर के महासागर तेज़ी से अम्लीय होते जा रहे हैं। इसका सीधा असर समुद्री जीवन के अलावा मनुष्यों पर भी पड़ रहा है। खाद्य श्रृंखला पर हो रहे असर के नतीजे आगे चलकर घातक हो सकते हैं। ब्रिटेन के पर्यावरण सचिव हिलेरी बेन ने इन खतरों के प्रति आगाह किया है।

महासागरों के अम्लीय होने के पीछे कार्बन उत्सर्जन को ज़िम्मेदार माना जा रहा है और इसलिए कार्बन उत्सर्जन में कटौती बेहद ज़रूरी है। आंकड़ों के अनुसार पिछले 200 साल में जैविक ईंधन के जलने से निकली कार्बन डाईऑक्साइड का 50 फीसदी से ज़्यादा समुद्र सोख चुके हैं।

हिलेरी बेन के अनुसार कार्बन डाईऑक्साइड की सांद्रता बढ़ने के कारण महासागर अम्लीय होते रहे हैं। इसका असर महासागरों में रहने वाले जंतुओं पर पड़ रहा है। महासागरों में बढ़ती अम्लीयता मूंगा चट्टानों और मछलियों, केंकड़ों पर असर डाल रही है। वर्ष 2007 में हुए अध्ययन के मुताबिक मूंगों का विकास 14 प्रतिशत तक घट गया है। विश्व की आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रोटीन के लिए मछलियों पर निर्भर है। समुद्री पर्यावरण में परिवर्तन के चलते यह पूरी खाद्य श्रृंखला ही गड़बड़ा जाएगी।

आज स्थिति यह है कि मनुष्य के क्रियाकलापों की वजह से कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि हो रही है। वैसे तो पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को सोखकर पर्यावरण में इसकी मात्रा को संतुलित करने में सहायता करते हैं मगर जंगलों के अंधाधुंध विनाश के कारण यह संतुलन काफी हद तक बिगड़ा है।

कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन को पूर्णतया रोका तो नहीं जा सकता, पर कम अवश्य किया जा सकता है। जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम करके, मोटर वाहनों की संख्या में कमी करके, ऊर्जा दक्षता बढ़ाकर, ऊर्जा संरक्षण के तरीके अपनाकर तथा वन रोपण एवं संरक्षण कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से संचालित करके इसके उत्सर्जन को कम किया जा सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***